

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

प्रमोद सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग) चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज, हेंवरा, इटावा

Email: pramodsingh2382@gmail.com

Received: 19/07/2026 | Accepted: 25/08/2026 | Published: 30/09/2026

सारांश

आधुनिकीकरण आधुनिक समाज के निर्माण की एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसने सामाजिक संस्थाओं, आर्थिक संबंधों, पारिवारिक संरचना, शिक्षा, रोजगार, संचार और जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया है। भारतीय समाज में भी आधुनिकीकरण के प्रभाव से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। शिक्षा के प्रसार, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, तकनीकी विकास, नगरीकरण, कानूनी जागरूकता तथा संचार माध्यमों के विस्तार ने महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए हैं। इसके बावजूद महिलाओं की सामाजिक स्थिति को केवल उपलब्धियों के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। घरेलू जिम्मेदारियों का असमान वितरण, रोजगार में लैंगिक अंतर, कार्यस्थल पर भेदभाव, डिजिटल असमानता, हिंसा तथा सामाजिक रूढ़ियाँ आज भी महिलाओं की समान भागीदारी के मार्ग में बाधा बनी हुई हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वर्तमान भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण और महिलाओं की सामाजिक स्थिति के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन में महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका, राजनीतिक एवं सामाजिक सहभागिता तथा आधुनिकीकरण से उत्पन्न नई चुनौतियों को प्रमुख आधार बनाया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण ने महिलाओं के लिए अवसरों का विस्तार किया है, लेकिन अवसरों की उपलब्धता अपने आप सामाजिक समानता सुनिश्चित नहीं करती। इसके लिए शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन और संस्थागत समर्थन का समान रूप से विकसित होना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: आधुनिकीकरण, महिला, सामाजिक स्थिति, महिला शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, लैंगिक समानता।

1. प्रस्तावना एवं अध्ययन की पृष्ठभूमि

किसी भी समाज की प्रगति का आकलन केवल आर्थिक विकास या तकनीकी उपलब्धियों से नहीं किया जा सकता। समाज में महिलाओं की स्थिति भी उसके विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति ऐतिहासिक रूप से एक जैसी नहीं रही है। अलग-अलग कालखंडों में उनके अधिकार, सामाजिक भूमिकाएँ, शिक्षा, संपत्ति, विवाह और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। आधुनिक काल में इन परिवर्तनों की गति अपेक्षाकृत तेज हुई है और इसमें आधुनिकीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आधुनिकीकरण से सामान्यतः उस सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझा जाता है जिसमें पारंपरिक सामाजिक व्यवस्थाओं के स्थान पर तर्क, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण, व्यक्तिवाद, गतिशील सामाजिक संरचना और संस्थागत परिवर्तन को अधिक महत्व मिलने लगता है। Giddens (1991) ने आधुनिकता को सामाजिक जीवन के ऐसे रूपों से जोड़ा है जिनमें समय और स्थान के संबंधों, संस्थाओं तथा सामाजिक संबंधों में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। इस दृष्टि से आधुनिकीकरण केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं बल्कि जीवन जीने के तरीके में परिवर्तन की प्रक्रिया भी है।

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के विस्तार, औद्योगीकरण, नगरीकरण, लोकतांत्रिक संस्थाओं, संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक सुधारों के साथ आगे बढ़ी। महिलाओं के संदर्भ में इसका एक महत्वपूर्ण परिणाम यह रहा कि उनकी

भूमिका को केवल परिवार और घरेलू कार्यों तक सीमित रखने की धारणा को चुनौती मिली। शिक्षा और रोजगार ने महिलाओं के लिए घर के बाहर सक्रिय होने के नए अवसर खोले। Sen (1999) के अनुसार विकास को केवल आय में वृद्धि के रूप में नहीं बल्कि लोगों की वास्तविक स्वतंत्रताओं के विस्तार के रूप में देखना चाहिए। महिलाओं के संदर्भ में यह विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने की क्षमता उनकी वास्तविक स्वतंत्रताओं का विस्तार करती है।

वर्तमान समय में स्मार्टफोन, इंटरनेट, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन शिक्षा और सोशल मीडिया ने महिलाओं के सामाजिक अनुभवों को और अधिक व्यापक बनाया है। अब जानकारी, शिक्षा और रोजगार से संबंधित अवसर भौगोलिक सीमाओं तक पूरी तरह सीमित नहीं हैं। फिर भी यह मान लेना उचित नहीं होगा कि आधुनिकता के कारण लैंगिक असमानता समाप्त हो गई है। परिवार, समुदाय और कार्यस्थल में पारंपरिक मान्यताओं का प्रभाव अभी भी दिखाई देता है। अतः महिलाओं की सामाजिक स्थिति में हुए परिवर्तन को उपलब्धियों और चुनौतियों दोनों के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

2. महिलाओं की पारंपरिक एवं वर्तमान सामाजिक स्थिति

भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझने के लिए पारंपरिक और वर्तमान परिस्थितियों के बीच अंतर करना आवश्यक है। पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में परिवार महिलाओं के जीवन का प्रमुख केंद्र था। घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल और परिवार के सदस्यों की सेवा को महिलाओं की मुख्य जिम्मेदारी माना जाता था। यद्यपि सभी समुदायों और क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति एक जैसी नहीं थी, फिर भी व्यापक सामाजिक संरचना में लैंगिक भूमिकाओं का स्पष्ट विभाजन मौजूद था।

आधुनिक शिक्षा और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने इस स्थिति को धीरे-धीरे बदलने में योगदान दिया। महिला शिक्षा के विस्तार ने महिलाओं में अधिकारों और अवसरों के प्रति जागरूकता बढ़ाई। शिक्षा ने केवल रोजगार के अवसर नहीं बढ़ाए, बल्कि विवाह, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, बच्चों की शिक्षा और सामाजिक निर्णयों से जुड़े विषयों पर महिलाओं की भागीदारी को भी प्रभावित किया। Sen (1999) के अनुसार शिक्षा और सामाजिक अवसर व्यक्ति की क्षमता को बढ़ाते हैं; महिलाओं के मामले में इसका संबंध उनके निर्णय लेने और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से भी है।

वर्तमान समय में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में कई स्तरों पर परिवर्तन दिखाई देता है। महिलाएँ विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, प्रशासन, चिकित्सा, शिक्षा, बैंकिंग, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व ने भी स्थानीय स्तर पर उनकी सार्वजनिक भूमिका को विस्तृत किया है। इससे यह संकेत मिलता है कि महिला की सामाजिक पहचान धीरे-धीरे केवल पारिवारिक भूमिका से आगे बढ़कर नागरिक और पेशेवर भूमिका से भी जुड़ रही है।

इसके साथ ही परिवर्तन की प्रकृति सभी महिलाओं के लिए समान नहीं है। ग्रामीण और शहरी महिलाओं, शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं, आर्थिक रूप से सक्षम और कमजोर महिलाओं तथा विभिन्न सामाजिक समूहों की महिलाओं के अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए महिलाओं की सामाजिक स्थिति को एक समान अनुभव मानना उचित नहीं होगा। आधुनिकता के लाभों तक पहुँच में शिक्षा, आय, स्थान, डिजिटल संसाधन और सामाजिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

NFHS-5 के आँकड़े यह भी संकेत करते हैं कि महिलाओं की शिक्षा और संस्थागत संसाधनों तक पहुँच में विस्तार हुआ है, लेकिन सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ अभी भी बनी हुई हैं (International Institute for Population Sciences [IIPS] & ICF, 2021)। इसलिए वर्तमान सामाजिक स्थिति को परिवर्तन और निरंतरता दोनों के संदर्भ में देखना अधिक उपयुक्त है।

3. महिलाओं की शिक्षा एवं आर्थिक स्थिति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान, आत्मविश्वास, तार्किकता और निर्णय क्षमता का विकास करती है। महिला शिक्षा के विस्तार ने महिलाओं के लिए घर और परिवार से बाहर सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर बढ़ाए हैं। आधुनिक शिक्षा ने महिलाओं को विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों से जोड़ा है और उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी पहले की तुलना में अधिक व्यापक हुई है।

शिक्षा का प्रभाव केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहता। शिक्षित महिला अपने स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, परिवार नियोजन, आर्थिक निर्णय और सामाजिक अधिकारों के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकती है। World Bank (2012) ने महिला शिक्षा और आर्थिक एवं सामाजिक विकास के बीच मजबूत संबंध की ओर संकेत किया है। इसी कारण महिला शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास का साधन न मानकर सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में भी देखा जाता है।

आधुनिकीकरण ने महिलाओं के लिए रोजगार के नए क्षेत्र खोले हैं। पहले महिलाओं के रोजगार को कुछ पारंपरिक क्षेत्रों तक सीमित समझा जाता था, जबकि आज शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र, उद्यमिता और विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति देखी जा सकती है। आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी से महिलाओं की व्यक्तिगत आय बढ़ सकती है और परिवार के आर्थिक निर्णयों में उनकी भूमिका मजबूत हो सकती है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का सामाजिक महत्व भी है। जब महिला अपनी आय अर्जित करती है तो उसके पास व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता और परिवार के भीतर बातचीत की स्थिति मजबूत होने की संभावना बढ़ती है। Kabeer (1999) ने महिला सशक्तिकरण को संसाधनों, एजेंसी और उपलब्धियों के परस्पर संबंध से समझाया है। इस दृष्टि से रोजगार और आय को महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण लेकिन अकेला आधार नहीं माना जा सकता।

हालाँकि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी में समय के साथ परिवर्तन आया है, लेकिन रोजगार की प्रकृति, वेतन, कार्य की निरंतरता और सुरक्षित कार्यस्थल जैसे प्रश्न अभी भी महत्वपूर्ण हैं। Periodic Labour Force Survey की रिपोर्टें महिला और पुरुष श्रम भागीदारी तथा रोजगार की प्रकृति में अंतर को रेखांकित करती रही हैं (Ministry of Statistics and Programme Implementation [MoSPI], 2024)।

महिलाओं के आर्थिक जीवन में एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन व्यवसाय, घर से काम और डिजिटल शिक्षा ने कुछ महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। लेकिन इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों तक असमान पहुँच डिजिटल लैंगिक अंतर को भी जन्म देती है। इसलिए तकनीकी आधुनिकीकरण को तभी व्यापक सामाजिक परिवर्तन का आधार माना जा सकता है जब महिलाओं की डिजिटल पहुँच और डिजिटल साक्षरता भी बढ़े।

4. परिवार एवं सामाजिक संबंधों में महिलाओं की बदलती भूमिका

आधुनिकीकरण ने परिवार की संरचना और पारिवारिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ती प्रवृत्ति, नगरीकरण, रोजगार के लिए स्थानांतरण और शिक्षा के प्रसार ने पारिवारिक जीवन में कई बदलाव किए हैं। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव महिलाओं की भूमिका पर पड़ा है।

पारंपरिक परिवार में महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों से जुड़ी रही है। आधुनिक परिवार में महिला एक साथ पत्नी, माँ, शिक्षित व्यक्ति, कर्मचारी, उद्यमी या सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका निभा सकती है। यह बहुस्तरीय भूमिका महिला की सामाजिक पहचान को व्यापक बनाती है। परिवार में बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी भी कई परिवारों में बढ़ी है।

हालाँकि यहाँ एक महत्वपूर्ण विरोधाभास भी दिखाई देता है। महिलाओं के बाहर काम करने के बावजूद घरेलू कार्य और देखभाल की जिम्मेदारी पूरी तरह समान रूप से विभाजित नहीं हुई है। International Labour Organization (2018) ने unpaid care work के असमान वितरण को महिलाओं की आर्थिक भागीदारी से जुड़ी महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में रेखांकित किया है। इसका अर्थ यह है कि आधुनिक रोजगार में महिला की भागीदारी बढ़ने के बावजूद घर के काम की जिम्मेदारी का बड़ा हिस्सा उसके ऊपर रह सकता है।

विवाह संस्था में भी परिवर्तन दिखाई देता है। शिक्षा और रोजगार के कारण विवाह की आयु, जीवनसाथी के चयन, परिवार नियोजन और वैवाहिक संबंधों को लेकर महिलाओं की भूमिका में बदलाव आया है। अब कई महिलाएँ विवाह को जीवन का एकमात्र उद्देश्य न मानकर शिक्षा और करियर को भी प्राथमिकता देती हैं। फिर भी विवाह और परिवार से जुड़ी सामाजिक अपेक्षाएँ अभी भी महिलाओं पर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालती हैं।

आधुनिकता ने परिवार में संवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अवसर बढ़ाए हैं, लेकिन इससे नए तनाव भी उत्पन्न हो सकते हैं। काम और परिवार के बीच संतुलन, बच्चों की देखभाल, वृद्ध सदस्यों की जिम्मेदारी और पेशेवर अपेक्षाओं के बीच महिलाओं को कई बार दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। इसलिए परिवार में वास्तविक लैंगिक समानता केवल महिला को नौकरी करने की अनुमति देने से नहीं बल्कि घरेलू जिम्मेदारियों के अधिक समान वितरण से भी जुड़ी है।

5. राजनीतिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनका सार्वजनिक जीवन में प्रवेश है। लोकतांत्रिक व्यवस्था, शिक्षा, संचार माध्यमों और कानूनी जागरूकता ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बनाया है। स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए आरक्षण ने भी सार्वजनिक नेतृत्व के अवसरों को विस्तृत किया है।

73वें और 74वें संविधान संशोधनों के बाद पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी का विस्तार हुआ। इससे बड़ी संख्या में महिलाओं को स्थानीय शासन की प्रक्रिया से जुड़ने का अवसर मिला। इस सहभागिता का प्रभाव केवल निर्वाचित पद प्राप्त करने तक सीमित नहीं है; इससे महिलाओं को सार्वजनिक बैठकों, स्थानीय विकास योजनाओं और प्रशासनिक प्रक्रियाओं से परिचित होने का अवसर भी मिला।

महिला सशक्तिकरण का संबंध अधिकारों की जानकारी से भी है। आधुनिक संचार माध्यमों ने महिलाओं को कानून, सरकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार संबंधी सूचनाओं तक पहुँच प्रदान की है। सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपने अनुभव साझा करने और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने का मंच भी दिया है।

महिला आंदोलन और सामाजिक संगठनों ने भी महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया है। घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न, बाल विवाह, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बने हैं। भारत में महिलाओं की सुरक्षा और अधिकारों से संबंधित कानूनी ढाँचे का विकास भी इसी व्यापक सामाजिक परिवर्तन से जुड़ा हुआ है।

फिर भी राजनीतिक और सामाजिक सहभागिता में केवल संख्या को पर्याप्त संकेतक नहीं माना जा सकता। वास्तविक सशक्तिकरण के लिए निर्णय लेने की क्षमता, संसाधनों तक पहुँच और स्वतंत्र अभिव्यक्ति भी आवश्यक हैं। Kabeer (1999) के अनुसार empowerment को केवल किसी संस्था में उपस्थिति के आधार पर नहीं समझा जा सकता; उसमें व्यक्ति की agency अर्थात् अपनी पसंद और निर्णय को प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता भी शामिल होती है।

इसी प्रकार डिजिटल मंचों ने महिलाओं की आवाज को व्यापक बनाया है, लेकिन ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर हिंसा और निजी जानकारी के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं। इसलिए आधुनिक संचार तकनीक महिलाओं के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करती है।

6. आधुनिकीकरण की चुनौतियाँ एवं महिलाओं की वर्तमान समस्याएँ

आधुनिकीकरण को केवल सकारात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में देखना उचित नहीं होगा। आधुनिक जीवन ने महिलाओं के सामने कुछ नई चुनौतियाँ भी रखी हैं। सबसे महत्वपूर्ण चुनौती यह है कि सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन की गति कई बार संस्थागत और पारिवारिक परिवर्तन की गति से अलग रहती है।

आज महिला से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षा प्राप्त करे, नौकरी करे और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने, लेकिन कई परिवारों में उससे घरेलू जिम्मेदारियों को पहले की तरह निभाने की अपेक्षा भी की जाती है। परिणामस्वरूप कामकाजी महिलाओं के सामने double burden की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह समस्या विशेष रूप से तब गंभीर होती है जब परिवार में घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल का समान वितरण नहीं होता।

दूसरी चुनौती रोजगार से संबंधित है। केवल रोजगार प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है; रोजगार की गुणवत्ता, समान वेतन, सुरक्षित कार्य वातावरण, पदोन्नति के अवसर और सामाजिक सुरक्षा भी महत्वपूर्ण हैं। महिलाओं की आर्थिक स्थिति को समझने के लिए इन सभी पहलुओं को साथ देखना आवश्यक है।

तीसरी चुनौती डिजिटल असमानता की है। डिजिटल तकनीक आधुनिक शिक्षा और रोजगार का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है, लेकिन सभी महिलाओं को समान रूप से इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्र, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार तथा कम शिक्षित महिलाओं के सामने यह समस्या अधिक दिखाई दे सकती है। इस प्रकार डिजिटल आधुनिकीकरण तभी समावेशी कहा जा सकता है जब उसके लाभों तक महिलाओं की समान पहुँच हो।

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा भी आधुनिक समाज की एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। शिक्षा और आर्थिक विकास के बावजूद घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और अन्य प्रकार की हिंसा की घटनाएँ सामाजिक संरचनाओं में मौजूद असमानताओं की ओर संकेत करती हैं। NFHS-

5 में भी महिलाओं के अनुभवों से संबंधित विभिन्न स्वास्थ्य एवं हिंसा संकेतकों को दर्ज किया गया है (IIPS & ICF, 2021)। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक और तकनीकी विकास अपने आप लैंगिक समानता की गारंटी नहीं देता।

इसके अतिरिक्त सामाजिक मीडिया ने महिलाओं के लिए अभिव्यक्ति के नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन ऑनलाइन ट्रोलिंग, साइबर स्टॉकिंग, अशोभनीय संदेश और निजी सामग्री के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। इस कारण डिजिटल साक्षरता के साथ डिजिटल सुरक्षा और कानूनी जागरूकता भी आवश्यक हो गई है।

आधुनिकीकरण की एक अन्य चुनौती सांस्कृतिक संक्रमण से संबंधित है। पुरानी मान्यताओं और नए मूल्यों के बीच संघर्ष कई बार परिवार और समाज में तनाव उत्पन्न करता है। महिलाओं के पहनावे, शिक्षा, नौकरी, विवाह और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लेकर पीढ़ियों के बीच दृष्टिकोण का अंतर इसका उदाहरण है। अतः आधुनिकीकरण को केवल परंपरा के अंत और आधुनिकता की शुरुआत के रूप में नहीं, बल्कि दोनों के बीच चल रही सामाजिक पुनर्संरचना के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

7. निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण ने भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। शिक्षा के विस्तार ने महिलाओं की जागरूकता और आत्मविश्वास को बढ़ाया है। रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी ने उनकी आर्थिक भूमिका को व्यापक किया है। परिवार में निर्णय लेने, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य तथा सामाजिक जीवन में उनकी भूमिका में भी परिवर्तन दिखाई देता है। इसी प्रकार स्थानीय शासन, सामाजिक संगठनों और डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं की सार्वजनिक सहभागिता के नए रास्ते खोले हैं।

फिर भी आधुनिकीकरण को महिलाओं की समस्याओं का स्वतः समाधान मानना उचित नहीं होगा। सामाजिक समानता के लिए केवल शिक्षा और रोजगार के अवसर पर्याप्त नहीं हैं। महिलाओं को समान अवसरों के साथ सुरक्षित वातावरण, समान पारिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा, डिजिटल संसाधन और घरेलू जिम्मेदारियों में सहयोग की आवश्यकता है। परिवार और समाज की मानसिकता में परिवर्तन भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

महिला सशक्तिकरण के लिए विद्यालयी स्तर से ही लैंगिक समानता, संवैधानिक अधिकारों और सम्मानजनक सामाजिक व्यवहार की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों को विशेष रूप से ग्रामीण तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं तक पहुँचाना आवश्यक है। रोजगार के क्षेत्र में सुरक्षित और समान अवसर उपलब्ध कराने के साथ childcare तथा कार्य-जीवन संतुलन से संबंधित सुविधाओं को भी मजबूत किया जाना चाहिए।

डिजिटल युग में महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण को शिक्षा का हिस्सा बनाना उपयोगी होगा। साथ ही महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से संबंधित कानूनों के प्रति जागरूकता और संस्थागत सहायता को अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए नए अवसर अवश्य उपलब्ध कराए हैं, लेकिन इन अवसरों का वास्तविक लाभ तभी व्यापक रूप से प्राप्त होगा जब सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक संस्थाएँ और पारिवारिक संबंध भी समानता की दिशा में आगे बढ़ें। महिला सशक्तिकरण को केवल महिलाओं की जिम्मेदारी मानने के बजाय परिवार, समाज, शैक्षिक संस्थाओं, कार्यस्थलों और राज्य की साझा जिम्मेदारी के रूप में देखना अधिक सार्थक होगा। आधुनिक समाज की वास्तविक प्रगति इसी बात से निर्धारित होगी कि महिलाओं को अवसर मिलने के साथ-साथ उन अवसरों का स्वतंत्र और सम्मानजनक उपयोग करने की वास्तविक क्षमता भी प्राप्त हो।

संदर्भ सूची (References)

- [1]. Giddens, A. (1991). *Modernity and self-identity: Self and society in the late modern age*. Stanford University Press.
- [2]. International Institute for Population Sciences (IIPS), & ICF. (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India report*. IIPS.
- [3]. International Labour Organization. (2018). *Care work and care jobs for the future of decent work*. International Labour Office.
- [4]. Kabeer, N. (1999). Resources, agency, achievements: Reflections on the measurement of women's empowerment. *Development and Change*, 30(3), 435–464. <https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125>

- [5]. Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2024). Periodic Labour Force Survey (PLFS): Annual report, July 2023–June 2024. Government of India.
- [6]. Sen, A. (1999). Development as freedom. Oxford University Press.
- [7]. United Nations Women. (2023). Progress on the Sustainable Development Goals: The gender snapshot 2023. UN Women.
- [8]. World Bank. (2012). World development report 2012: Gender equality and development. World Bank.
- [9]. World Bank. (2024). Women, business and the law 2024. World Bank.

Cite this Article:

प्रमोद सिंह. (2026). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव. *Chaitanya Samvad Interdisciplinary Journal of Research*, 2(3), 12–17.

Doi: <https://doi.org/10.65250/chaitanyasamvad.v2i3.3>

Journal URL: <https://chaitanyasamvad.com/>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

Disclaimer/Publisher's Note: The opinions, interpretations, and information presented in this article are the sole responsibility of the author(s). The publisher and editorial team shall not be held responsible for any inaccuracies, copyright-related concerns, legal claims, or consequences resulting from the publication or use of this content.

चैतन्या इवलरवद
Conscious Conversations | Meaningful Connections